अनुवाद

जिसने इन्द्रियतृप्ति की वासना को सम्पूर्ण रूप से त्याग दिया है, जो सब प्रकार की इच्छा और ममता से मुक्त है तथा मिथ्या अहंकार को त्याग चुका है, वही पुरुष सच्ची शान्ति को पाता है।।७१।।

तात्पर्य

निःस्पृह होने का अर्थ इन्द्रियतृप्ति की इच्छा न करना है। भाव यह है कि कृष्णभावनाभावित होने की इच्छा वास्तव में इच्छाशून्यता ही है। देह में मिथ्या अहंभाव और संसार की किसी भी वस्तु में कल्पित स्वामित्व न रखते हुए श्रीकृष्ण के नित्य दास के रूप में अपने यथार्थ स्वरूप को जान लेना कृष्णभावना की सिद्ध अवस्था है। इस संसिद्धि में स्थित भक्त जानता है कि सम्पूर्ण सम्पत्ति के एकमात्र स्वामी श्रीकृष्ण हैं, अतः प्रत्येक वस्तु का उपयोग उनकी प्रीति के लिए ही होना चाहिये। अर्जुन प्रारंभ में निजेन्द्रिय सुख के लिये युद्ध नहीं करना चाहता है। परन्तु पूर्णतया कृष्णभावनाभावित हो जाने पर उसने युद्ध किया, क्योंकि श्रीकृष्ण को यही इष्ट था। स्वयं अपने लिए अर्जुन को युद्ध की कुछ भी इच्छा नहीं थी, किन्तु श्रीकृष्ण के सन्तोष के लिए उसी अर्जुन ने पूर्ण पराक्रम से युद्ध किया। श्रीकृष्ण के परितोषण की स्पृहा वस्तुतः निस्पृहा ही है। यह इच्छानाश का कृत्रिम प्रयास नहीं है। जीवात्मा इच्छाशून्य अथवा इन्द्रियशून्य नहीं हो सकता, उसे केवल इच्छा का स्वरूप बदलना है। वितृष्ण पुरुष निश्चित रूप से जानता है कि सब कुछ श्रीकृष्ण का है (**ईशावास्यमिदं सर्वं**), अतएव किसी भी वस्तु पर वह अपना मिथ्या अधिकार घोषित नहीं करता। यह ज्ञान स्वरूप-साक्षात्कार की इस पूर्ण अनुभूति पर आधारित है कि प्रत्येक जीव श्रीकृष्ण का नित्य भिन्न-अंश है, अतः उसकी शाश्वत् स्थिति श्रीकृष्ण के समान अथवा उनसे अधिक कभी नहीं हो सकती। कृष्णभावनामृत का यह ज्ञान यथार्थ शान्ति का प्रधान आधार है।

28.2

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।७२।।

एषा=यह; **ब्राह्मी**=दिव्य; **स्थितिः**=अवस्था है; **पार्थ**=हे अर्जुन; **न**=नहीं; **एनाम्**=इसको; **प्राप्य**=प्राप्त हो कर; **विमुह्यति**=मोहित होता है; **स्थित्वा**=स्थित होकर; **अस्याम्**=इस अवस्था में; **अन्तकाले**=मृत्यु समय; **अपि**=भी; **ब्रह्मनिर्वाणम्**=चिन्मय भगवद्धाम को; **ऋच्छति**=प्राप्त करता है।

अनुवाद

यह दिव्य भगवत्परायण जीवन का पथ है, जिसको प्राप्त होकर फिर मोहित नहीं होता। अन्तकाल में भी इस प्रकार स्थित पुरुष भगवद्धाम को प्राप्त हो जाता है।।७२।।

तात्पर्य

कृष्णभावना, अर्थात् भगवत्परायण जीवन की प्राप्ति होने को क्षणभर में ही